3

संधि
(Joining)

संधि शब्द का अर्थ है—मेल। व्याकरण में संधि का अर्थ दो या दो से अधिक ध्वनियों या वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न परिवर्तन (विकार) से होता है; जैसे—

- रमा + ईश = रमेश ➤ (आ + ई = ए)
- गिरि + इंद्र = गिरींद्र ➤ (इ + इ = ई)
- पर + उपकार = परोपकार ➤ (अ + उ = ओ)
- इति + आदि = इत्यादि ➤ (इ + आ = या)
- सदा + एव = सदैव ➤ (आ + ए = ऐ)
- सु + आगत = स्वागत ➤ (उ + आ = वा)

आपने देखा कि उपर्युक्त उदाहरणों में पहले शब्द की अंतिम ध्वनि तथा दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि के परस्पर मेल से परिवर्तन (विकार) आ गया है। यही परिवर्तन संधि है। अतएव,

दो वर्णों अथवा ध्वनियों के परस्पर मेल से उनके मूल रूप में उत्पन्न विकार (परिवर्तन) **संधि** कहलाता है।

ध्यान रखिए

- संधि केवल दो ध्वनियों (स्वर-व्यंजन) के बीच होती है, शब्दों के बीच नहीं। संधि होते समय ध्वनियों में परिवर्तन आ जाता है।

संधि-विच्छेद (Disjoining) : दो वर्णों के परस्पर मेल से बने नए शब्द को पुनः पहले वाली स्थिति में लाना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे—

अधिकांश = अधिक + अंश	सूर्योदय = सूर्य + उदय	महात्मा = महा + आत्मा
निषेध = निः + सेध	वाङ्मय = वाक् + मय	नमस्ते = नमः + ते

संधि के भेद (Kinds of Joining)

संधि के निम्नांकित तीन भेद होते हैं :

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

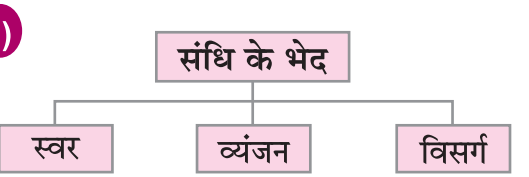

1. स्वर संधि (Joining of Vowels)

दो स्वरों के परस्पर मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे—

पर + अधीन = पराधीन (अ + अ = आ)	दया + आनंद = दयानंद (आ + आ = आ)
शुभ + इच्छा = शुभेच्छा (अ + इ = ए)	अति + अंत = अत्यंत (इ + अ = य्)

स्वर संधि के भेद (Kinds of Joining of Vowels) : स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं :

क. दीर्घ संधि ख. गुण संधि ग. वृद्धि संधि घ. यण संधि ङ. अयादि संधि

क. दीर्घ संधि : यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर ('अ', 'इ', 'उ') के बाद अन्य ह्रस्व या दीर्घ स्वर ('अ', 'इ', 'उ') आ जाए, तो दोनों के मेल से दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ) बन जाते हैं; जैसे—

अ	+ अ	= आ	मत	+ अनुसार	= मतानुसार	परम	+ अर्थ	= परमार्थ
अ	+ आ	= आ	गज	+ आनन	= गजानन	पर्वत	+ आरोही	= पर्वतारोही
आ	+ अ	= आ	सीमा	+ अंत	= सीमांत	सेवा	+ अर्थ	= सेवार्थ
आ	+ आ	= आ	श्रद्धा	+ आनंद	= श्रद्धानंद	विद्या	+ आलय	= विद्यालय

इ	+ इ	= ई	अभि	+ इष्ट	= अभीष्ट	रवि	+ इंद्र	= रवींद्र
इ	+ ई	= ई	प्रति	+ ईक्षा	= प्रतीक्षा	मुनि	+ ईश्वर	= मुनीश्वर
ई	+ ई	= ई	नारी	+ ईश्वर	= नारीश्वर	योगी	+ ईश्वर	= योगीश्वर
ई	+ इ	= ई	देवी	+ इच्छा	= देवीच्छा	सती	+ इच्छा	= सतीच्छा
उ	+ उ	= ऊ	विधु	+ उदय	= विधूदय	अनु	+ उदित	= अनूदित
उ	+ ऊ	= ऊ	मधु	+ ऊष्मा	= मधूष्मा	लघु	+ ऊर्मि	= लघूर्मि
ऊ	+ ऊ	= ऊ	वधू	+ ऊर्जा	= वधूर्जा	भू	+ ऊष्मा	= भूष्मा
ऊ	+ उ	= ऊ	वधू	+ उत्सव	= वधूत्सव	भू	+ उत्सर्ग	= भूत्सर्ग

ख. गुण संधि : यदि 'अ'/'आ' के बाद 'इ'/'ई', 'उ'/'ऊ' अथवा 'ऋ' आ जाए, तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है; जैसे—

अ	+ इ	= ए	गज	+ इंद्र	= गजेंद्र	शुभ	+ इच्छा	= शुभेच्छा
अ	+ ई	= ए	सोम	+ ईश	= सोमेश	परम	+ ईश्वर	= परमेश्वर
आ	+ इ	= ए	यथा	+ इष्ट	= यथेष्ट	महा	+ इंद्र	= महेंद्र
आ	+ ई	= ए	लंका	+ ईश	= लंकेश	कमला	+ ईश्वर	= कमलेश्वर
अ	+ उ	= ओ	वीर	+ उचित	= वीरोचित	हित	+ उपदेश	= हितोपदेश
अ	+ ऊ	= ओ	सूर्य	+ ऊर्जा	= सूर्योर्जा	समुद्र	+ ऊर्मि	= समुद्रोर्मि
आ	+ उ	= ओ	गंगा	+ उदक	= गंगोदक	महा	+ उद्धि	= महोदधि
आ	+ ऊ	= ओ	गंगा	+ ऊर्मि	= गंगोर्मि	यमुना	+ ऊर्मि	= यमुनोमि
अ	+ ऋ	= अर्	देव	+ ऋषि	= देवर्षि	ब्रह्म	+ ऋषि	= ब्रह्मर्षि
आ	+ ऋ	= अर्	महा	+ ऋषि	= महर्षि	राजा	+ ऋषि	= राजर्षि

ग. वृद्धि संधि : यदि 'अ'/'आ' के बाद 'ए'/'ऐ' हो, तो दोनों के स्थान पर ऐ; 'ओ'/ 'औ' हो, तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है; जैसे—

अ	+ ए	= ऐ	लोक	+ एषणा	= लोकैषणा	हित	+ एषी	= हितैषी
आ	+ ए	= ऐ	तथा	+ एव	= तथैव	सदा	+ एव	= सदैव
अ	+ ऐ	= ऐ	राज	+ ऐश्वर्य	= राजैश्वर्य	देव	+ ऐश्वर्य	= देवैश्वर्य
आ	+ ऐ	= ऐ	माता	+ ऐश्वर्य	= मातैश्वर्य	महा	+ ऐश्वर्य	= महैश्वर्य
अ	+ ओ	= औ	जल	+ ओघ	= जलौघ	परम	+ ओज	= परमौज
आ	+ ओ	= औ	महा	+ ओषधि	= महौषधि	परम	+ ओजस्वी	= परमौजस्वी
अ	+ औ	= औ	वन	+ औषध	= वनौषध	वीर	+ औदार्य	= वीरौदार्य
आ	+ औ	= औ	राजा	+ औदार्य	= राजौदार्य	महा	+ औदार्य	= महौदार्य

घ. यण संधि : यदि 'इ'/'ई', 'उ'/'ऊ' अथवा 'ऋ' के बाद कोई अन्य स्वर आ जाए, तो 'इ'/'ई' के स्थान पर य; 'उ'/'ऊ' के स्थान पर व तथा 'ऋ' के स्थान पर र हो जाता है; जैसे—

इ	+ अ	= य	गति	+ अवरोध	= गत्यवरोध	अति	+ अधिक	= अत्यधिक
इ	+ आ	= या	वि	+ आकुल	= व्याकुल	इति	+ आदि	= इत्यादि

ई	+	अ	=	य	नदी	+	अर्पण	=	नद्यर्पण	दासी	+	अपराध	=	दास्यपराध
ई	+	आ	=	या	लक्ष्मी	+	आगमन	=	लक्ष्म्यागमन	सखी	+	आगमन	=	सख्यागमन
इ	+	उ	=	यु	अभि	+	उदय	=	अभ्युदय	अति	+	उत्तम	=	अत्युत्तम
इ	+	ऊ	=	यू	वि	+	ऊह	=	व्यूह	प्रति	+	ऊष	=	प्रत्यूष
इ	+	ए	=	ये	प्रति	+	एक	=	प्रत्येक	अधि	+	एता	=	अध्येता
इ	+	ऐ	=	यै	देवी	+	ऐश्वर्य	=	देव्यैश्वर्य	नदी	+	ऐश्वर्य	=	नद्यैश्वर्य
उ	+	अ	=	व	मधु	+	अरि	=	मध्वरि	अनु	+	अय	=	अन्वय
उ	+	आ	=	वा	गुरु	+	आदेश	=	गुर्वादेश	सु	+	आगत	=	स्वागत
उ	+	इ	=	वि	अनु	+	इति	=	अन्विति	अनु	+	इत	=	अन्वित
उ	+	ई	=	वी	अनु	+	ईषा	=	अन्वीषा	अनु	+	ईक्षण	=	अन्वीक्षण
उ	+	ए	=	वे	अनु	+	एषण	=	अन्वेषण	प्रभु	+	एषणा	=	प्रभ्वेषणा
ऋ	+	अ	=	र	पितृ	+	अर्पण	=	पित्रर्पण	पित्र	+	अर्थम्	=	पित्रर्थम्
ऋ	+	आ	=	रा	मात्र	+	आदेश	=	मात्रादेश	मातृ	+	आनंद	=	मात्रानंद
ऋ	+	उ	=	रु	पितृ	+	उपदेश	=	पित्रुपदेश	मातृ	+	उपदेश	=	मात्रुपदेश
ऋ	+	इ	=	रि	पितृ	+	इच्छा	=	पित्रिच्छा	मातृ	+	इच्छा	=	मात्रिच्छा

ङ. अयादि संधि : यदि पहले शब्द के अंत में 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' और दूसरे शब्द के आरंभ में कोई अन्य स्वर आ जाए, तो 'ए' का अय्; 'ऐ' का आय्; 'ओ' का अव् तथा 'औ' का आव् हो जाता है; जैसे—

ए	+	अ	=	अय्	शे	+	अन	=	शयन	चे	+	अन	=	चयन
ऐ	+	अ	=	आय्	गै	+	अक	=	गायक	गै	+	अन	=	गायन
ओ	+	अ	=	अव्	भो	+	अन	=	भवन	पो	+	अन	=	पवन
औ	+	अ	=	आव्	पौ	+	अक	=	पावक	धौ	+	अक	=	धावक

2. व्यंजन संधि (Joining of Consonant)

किसी व्यंजन का स्वर से, स्वर का व्यंजन से तथा व्यंजन का व्यंजन से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे–

जगत् + अंबा = जगदंबा (त् + अ = द ➤ व्यंजन + स्वर)
अनु + छेद = अनुच्छेद (उ + छ = च्छ ➤ स्वर + व्यंजन)
सत् + भावना = सद्भावना (त् + भ = द्भ ➤ व्यंजन + व्यंजन)

व्यंजन संधि के प्रकार (Types of Joining of Consonant) : व्यंजन संधि में होने वाला मेल तीन प्रकार का है, जो इस प्रकार है :

❖ **व्यंजन और स्वर का मेल**

जगत् + ईश = जगदीश (त् + ई = दी ➤ व्यंजन 'त' + स्वर 'ई')
वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी ➤ व्यंजन 'क्' + स्वर 'ई')

❖ **स्वर और व्यंजन का मेल**

आ + छादन = आच्छादन (आ + छ = च्छ ➤ स्वर 'आ' + व्यंजन 'छ')
स्व + छंद = स्वच्छंद (अ + छ = च्छ ➤ स्वर 'अ' + व्यंजन 'छ')

❖ **व्यंजन और व्यंजन का मेल**

सम् + गत = संगत (म् + ग = म्ग ➤ व्यंजन 'म्' + व्यंजन 'ग')

सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज ➤ व्यंजन 'त्' + व्यंजन 'ज')

व्यंजन संधि के नियम (Rules of Joining of Consonant) :

क. वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन : यदि वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण (ग्, घ्, ज्, झ्, ड्, ढ, द्, ध्, ब्, भ्) अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई व्यंजन अथवा कोई स्वर आ जाए, तो पहला वर्ण अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है; जैसे—क् का ग्, च् का ज्, ट् का ड्, त् का द्, प् का ब् आदि।

उदाहरण :

क् का ग्	➤	दिक्	+ विजय	= दिग्विजय	वाक् + ईश	= वागीश
च् का ज्	➤	अच्	+ अंता	= अजंता	अच् + आदि	= अजादि
ट् का ड्	➤	षट्	+ आनन	= षडानन	षट् + दर्शन	= षड्दर्शन
त् का द्	➤	तत्	+ भव	= तद्भव	सत् + धर्म	= सद्धर्म
प् का ब्	➤	अप्	+ ज	= अब्ज	कप् + अंध	= कबंध

ख. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन : यदि व्यंजन क्, च्, ट्, त्, प् के बाद म् या न् हो, तो क् का ङ्, च् का ञ्, ट् का ण्, त् का न् और प् का म् हो जाता है; जैसे—

क् का ङ्	➤	वाक्	+ मय	= वाङ्मय	दिक् + नाग	= दिङ्नाग
ट् का ण्	➤	षट्	+ मास	= षण्मास	षट् + मुख	= षण्मुख
त् का न्	➤	तत्	+ नाम	= तन्नाम	जगत् + नाथ	= जगन्नाथ
प् का म्	➤	अप्	+ मय	= अम्मय	अप् + मानम्	= अम्मानम्

ग. 'त्' संबंधी नियम : 'त' संबंधी कुछ नियम इस प्रकार हैं:

❖ जब त् के बाद च या छ आए, तो त् का च् हो जाता है; जैसे—

सत् + चरित्र = सच्चरित्र उत् + चारण = उच्चारण

❖ जब त् के बाद ज या झ आए, तो त् का ज् हो जाता है; जैसे—

जगत् + जननी = जगज्जननी तत् + जनित = तज्जनित

❖ जब त् के बाद ट या ठ आए, तो त् का ट् हो जाता है; जैसे—

तत् + टीका = तट्टीका वृहत् + टीका = वृहट्टीका

❖ जब त् के बाद ड या ढ आए, तो त् का ड् हो जाता है; जैसे—

उत् + डयन = उड्डयन तत् + डमरू = तड्डमरू

❖ जब त् के बाद ल आए, तो त् का ल् हो जाता है; जैसे—

उत् + लेख = उल्लेख तत् + लीन = तल्लीन

❖ जब त् के बाद ह आए, तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है; जैसे—

उत् + हत = उद्धत उत् + हरण = उद्धरण

❖ जब त् के बाद श आए, तो त् का च् और श् का छ हो जाता है; जैसे—

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र उत् + श्वास = उच्छवास

घ. 'म' संबंधी नियम : म् संबंधी कुछ नियम इस प्रकार हैं:

❖ यदि म् के बाद क, च, ट, त, प आए, तो म् के स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण अनुस्वार (ं) हो जाता है; जैसे—

म् का ङ	➤	सम्	+ कल्प	= संकल्प	सम् + गम	= संगम
म् का ञ्	➤	सम्	+ चय	= संचय	सम् + जय	= संजय

म् का न् ➤ सम् + तोष = संतोष सम् + देह = संदेह
म् का म् ➤ सम् + पूर्ण = संपूर्ण सम् + भावना = संभावना

❖ यदि म् के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह आए, तो म् का सदैव अनुस्वार (ं) हो जाता है; जैसे—

सम् + वाद = संवाद सम् + सार = संसार सम् + रक्षण = संरक्षण
सम् + योग = संयोग सम् + लग्न = संलग्न सम् + शय = संशय

❖ यदि म् के बाद 'म' आ जाए, तो 'म्म' हो जाता है; जैसे—

सम् + मुख = सम्मुख सम् + मान = सम्मान सम् + मति = सम्मति

ङ. 'छ' संबंधी नियम : यदि किसी स्वर के बाद छ वर्ण आए, तो छ से पहले च् आ जाता है; जैसे—

स्व + छंद = स्वच्छंद अनु + छेद = अनुच्छेद आ + छादन = आच्छादन

च. 'न' संबंधी नियम : यदि ऋ, र या ष के बाद 'न्' हो, तो ण हो जाता है; जैसे—

परि + नाम = परिणाम राम + आयन = रामायण

याद रखिए

- 'चवर्ग', 'टवर्ग', 'तवर्ग', 'श' और 'स' आने पर 'न्' का 'ण' नहीं होता; जैसे—दुर्जन, पर्यटन, दर्शन, रसना, रतन, अर्जुन आदि।

3. विसर्ग संधि (Joining of Visarga)

विसर्ग (:) के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे—

मनः + रथ = मनोरथ दुः + जन = दुर्जन नमः + ते = नमस्ते
(: + र = ओ) (: + ज = र्ज) (: + त = स्)

विसर्ग संधि के नियम (Rules of Joining of Visarga) : विसर्ग संधि बनाने के कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं :

क. विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन :

यशः + गान = यशोगान मनः + रथ = मनोरथ तपः + बल = तपोबल
मनः + रंजन = मनोरंजन मनः + विनोद = मनोविनोद मनः + हर = मनोहर

ख. विसर्ग का 'र्' में परिवर्तन :

निः + धन = निर्धन दुः + बुद्धि = दुर्बुद्धि पुनः + जन्म = पुर्नजन्म
निः + भय = निर्भय आशीः + वाद = आशीर्वाद दुः + गुण = दुर्गुण

ग. विसर्ग का 'श्' में परिवर्तन :

निः + चय = निश्चय दुः + चरित्र = दुश्चरित्र निः + छल = निश्छल
निः + चल = निश्चल दुः + शासन = दुश्शासन हरिः + चंद्र = हरिश्चंद्र

घ. विसर्ग का 'स्' में परिवर्तनः

निः + संतान = निस्संतान निः + तेज = निस्तेज निः + संकोच = निस्संकोच

ङ. विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन :

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार दुः + कर्म = दुष्कर्म निः + काम = निष्काम

च. विसर्ग का लोप होना :

विसर्ग का 'र' से मेल होने पर विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे—

निः + रोग = नीरोग निः + रस = नीरस निः + रज = नीरज

छ. विसर्ग में परिवर्तन न होना :

यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग का मेल 'क' तथा 'प' से हो, तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे—

अंतः + करण = अंतःकरण प्रातः + काल = प्रातःकाल पयः + पान = पयःपान

हिंदी की प्रमुख संधियाँ (Important Joinings of Hindi)

हिंदी में संधि के अपने कोई नियम नहीं हैं। संधि केवल संस्कृत शब्दों में ही होती है, लेकिन हिंदी में संस्कृत की संधि के नियम ही लागू होते हैं। बोलते समय प्रवाह के कारण कुछ संधियाँ होती हैं जिनके लिए विद्वानों ने कुछ नियम विकसित किए हैं, जो इस प्रकार हैं :

1. स्वर का ह्रस्व होना

कान + कटा = कनकटा	हाथ + कड़ी = हथकड़ी	आधा + खिला = अधखिला
ठाकुर + आइन = ठकुराइन	फूल + वाड़ी = फुलवाड़ी	दूध + मुँहा = दुधमुँहा
लड़का + पन = लड़कपन	काठ + फोड़ा = कठफोड़ा	काला + मुँहा = कलमुँहा

2. स्वर का लोप होना

पानी + घट = पनघट	बकरा + ईद = बकरीद	कटोरा + दान = कटोरदान

3. व्यंजन का लोप होना

उस + ही = उसी	सह + ही = सही	इस + ही =इसी

4. प्रत्यय के योग से संधि होना

ऊपर + उक्त = उपरोक्त	लुट + एरा = लुटेरा	लोहा + आर = लुहार
मामा + एरा = ममेरा	गाँव + आर = गँवार	सोना + आर = सुनार

5. ह्रस्व स्वर का दीर्घ होना तथा किसी पद का लोप भी होना

दीन + नाथ = दीनानाथ	मूसल + धार = मूसलाधार	उत्तर + खंड = उत्तराखंड

आओ दोहराएँ

- दो वर्णों के परस्पर मेल से उनके मूल रूप में होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।
- दो वर्णों के मेल से बने नए शब्द को पहली स्थिति में वापस लाना संधि-विच्छेद कहलाता है।
- संधि के तीन भेद होते हैं : स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि।
- स्वर संधि के पाँच भेद हैं : दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि,अयादि संधि।
- व्यंजन संधि में होने वाला मेल तीन प्रकार का है : व्यंजन का स्वर से, स्वर का व्यंजन से तथा व्यंजन का व्यंजन से।
- विसर्ग के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

अब बताइए

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)**

1. दिए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने (✓) चिह्न लगाइए :

क. व्यंजन का व्यंजन से, व्यंजन का स्वर से तथा स्वर का व्यंजन से मेल होने पर कौन-सी संधि होना संभव है?

(a) विसर्ग संधि ☐ (b) स्वर संधि ☐ (c) वृद्धि संधि ☐ (d) व्यंजन संधि ☐

ख. जब त् के बाद 'च' या 'छ' आता है, तो त् का क्या हो जाता है?

(a) ज् ☐ (b) च् ☐ (c) द् ☐ (d) छ ☐

ग. यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर के बाद अन्य ह्रस्व या दीर्घ स्वर आ जाए, तो दोनों के मेल से कौन-सा स्वर बनता है?

(a) ह्रस्व स्वर ☐ (b) प्लुत स्वर ☐ (c) दीर्घ स्वर ☐ (d) कोई नहीं ☐

घ. 'राजेंद्र' शब्द के संधि-विच्छेद का कौन-सा रूप बिलकुल सही है?

(a) राज + इंद्र ☐ (b) राजा + इंद्र ☐ (c) राजा + ईंद्र ☐ (d) कोई नहीं ☐

ङ. सु + अस्ति की संधि है:

(a) सुअस्ति ☐ (b) सुस्ती ☐ (c) स्वस्ति ☐ (d) सुआस्ति ☐

2. सही संधि-विच्छेद के सामने (✓) चिह्न लगाइए:

वीरोचित	= वीर + उचित ☐	वीरः + उचित ☐	वीरो + चित ☐
पर्यावरण	= परिः + आवरण ☐	पर्य + आवरण ☐	परि + आवरण ☐
निष्कलंक	= निर् + कलंक ☐	निः + कलंक ☐	निस् + कलंक ☐
सागरोर्मि	= सागर + ऊर्मि ☐	सागर + उर्मि ☐	सागर + ओर्मि ☐

3. संधि कीजिए:

सब + ही = ________ यहाँ + ही = ________ कान + कटा = ________

पानी + घाट = ________ आधा + पका = ________ दूध + मुँहा = ________

बकरा + ईद = ________ लोटा + इया = ________ इस + ही = ________

4. दिए उदाहरण के अनुसार संधि कीजिए:

देव + ऋषि = अ + ऋ = अर् ➤ देवर्षि उत् + ज्वल = ________ ➤ ________

नव + उदय = ________ ➤ ________ यदि + अपि = ________ ➤ ________

परि + नाम = ________ ➤ ________ वाक् + जाल = ________ ➤ ________

5. संधि-विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए:

नायक = ________ ________ व्यूह = ________ ________

लोकोक्ति = ________ ________ रजनीश = ________ ________

गायक = ________ ________ तथैव = ________ ________

पावक = ________ ________ निस्संतान = ________ ________

6. संधि करके संधि का नाम भी लिखिए:

स्व + अर्थ = ________ ________ नारी + ईश्वर = ________ ________

निः + कपट = ________ ________ वाक् + मय = ________ ________

भो + इष्टा = ________ ________ दुः + गम = ________ ________

मातृ + आज्ञा = ________ ________ जगत + अंबा = ________ ________

अनु + छेद = ________ ________ सम् + हार = ________ ________

7. सोचकर उत्तर लिखिए:

क. संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

ख. संधि-विच्छेद से क्या आशय है? उदाहरण सहित लिखिए।

ग. संधि के कितने भेद हैं? नामोल्लेख करते हुए प्रत्येक के दो-दो उदाहरण भी लिखिए।

घ. व्यंजन संधि से क्या अभिप्राय है? यह किस-किस प्रकार से हो सकती है?

ङ. यण संधि और अयादि संधि को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment)

1. अपनी पाठ्य पुस्तक के किसी गद्य पाठ से स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

2. स्वर संधि के उपभेदों—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण और अयादि; प्रत्येक के पाँच-पाँच ऐसे उदाहरण ढूँढ़िए जो आपकी पुस्तक (व्याकरण सरोवर) में न दिए गए हों:

दीर्घ	गुण	वृद्धि	यण	अयादि